International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in January 2024, ISSN -2393-8048

उद्यानिकी के कारण सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनः हनुमानगढ़ जिले का अध्ययन

किरण कौशिक, शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ. दिनेश कुमार, सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर

परिचयात्मक शोध की भूमिका

प्राचीनकाल से ही मनुष्य के भोजन में फल–सब्जी–मसालों इत्यादि का बड़ा महत्त्व रहा है। फल, फूल, सब्जी, मसाला, औषधी प्रकृति की अनुपम कृति है। मानव जीवन वनस्पति जगत से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। हमारे देश में प्रत्येक मनुष्य के दैनिक जीवन में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्य फल–फूल के बिना सम्पन्न नहीं होते हैं। इनके गुणों से हम सभी परिचित हैं। भारत कृषि प्रधान राष्ट्र है। यहां अधिकांश लोग प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से जुड़े रहते हैं। फल, फूल, सब्जी, मसाला, औषधी, पशुपालन इनको मिलाकर ही भारतीय उद्यानिकी सम्पूर्ण होती है।

स्वास्थ्य विज्ञान के अनुसार पौष्टिकता एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से फल–सब्जी सेवन को खाद्यान्न की तुलना में विशेष प्रमुखता दी गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन मापदण्ड के अनुसार प्रति व्यक्ति प्रतिदिन भोजन के साथ 92 ग्राम फलों का सेवन करने की सिफारिश की गई है।

फलों एवं सब्जियों को वैज्ञानिक एवं उन्नत तकनीकी द्वारा अधिक उपज एवं आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। प्राचीन समय में खेती आजीविका या पेट भरने तक सीमित थी किन्तु अब खेती ने व्यवसायिक रूप धारण कर लिया है तथा काश्तकार इकाई क्षेत्र में अधिक आय प्राप्त करना चाहता है। भारत सरकार भी कृषि को उद्योग का दर्जा देने पर गम्भीरता से विचार कर रही है।

हनुमानगढ़ जिला राजस्थान का कृषि प्रधान जिला है जिले का 41 प्रतिशत भाग सिंचित है। अतः यहां उद्यान विकास की प्रचुर सम्भावनाएं है। नाली (घग्घर) बेल्ट अब सब्जी पट्टी के रूप में प्रसिद्ध हो रही है। यहां भिण्डी, मिर्च, गाजर, गोभी, आलू, टमाटर, तोरी, घीया, लोकी इत्यादि सब्जियां प्रचुर मात्रा में उत्पन्न हो रही है। फलों में किन्नू, बेर, अमरूद, खजूर ने रफ्तार पकड़ी है।

फल, फूल, सब्जियां किसी क्षेत्र की सुन्दरता बढ़ाने, प्रदूषण दूर करने, भू–क्षरण रोकने, उर्वरा शक्ति बढ़ाने, प्रति इकाई अधिक उत्पादन, अधिक आय, रोजगार के साथ–साथ स्वास्थ्यवर्धक औषधीय गुणों से युक्त होती है।

हनुमानगढ़ जिला राजस्थान के उत्तरी क्षेत्र में श्रीगंगानगर जिले को विभाजित कर 12 जुलाई 1994 को नवसृजित किया गया था, जिसमें मई 1997 से कार्यालय सहायक निदेशक, उद्यान विभाग, हनुमानगढ़ का शुभारम्भ किया गया। इस जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 970315 हैक्टेयर है। इसमें 07 तहसील, 07 उपखण्ड, 07 पंचायत समिति, 251 ग्राम पंचायत व 1948 गाँव हैं। नोहर व भादरा तहसील में रेगिस्तान का ज्यादा प्रभाव है। जिले की सात तहसीलें क्रमशः हनुमानगढ़, पीलीबंगा, संगरिया, टिब्बी, रावतसर, नोहर, भादरा हैं। भूमि उपयोग की दृष्टि से कुल काश्त योग्य भूमि 8.71 लाख हैक्टेयर है। जिसमें सिंचित क्षेत्रफल 3.71 लाख हैक्टेयर है तथा असिंचित क्षेत्र 5.00 लाख हैक्टेयर है। जिले में सिंचाई का मुख्य स्रोत नहरे है। जिसमें मुख्य इन्दिरागाँधी नहर परियोजना का सिंचित क्षेत्रफल 93,834 हैक्टेयर है, भाखड़ा नहर परियोजना का सिंचित क्षेत्र 2,31,606 हैक्टेयर है तथा राजीवगाँधी सिद्धमुख नोहर सिंचाई परियोजना नवविकसित सिंचाई परियोजना हैं। जिसमें वर्तमान में 25–30 हजार हैक्टेयर सिंचित क्षेत्र है। कुछ क्षेत्र में नहरों के पास एवं घग्घर नदी बहाव क्षेत्र में ट्यूबवैल है।

उद्यान विभाग हनुमानगढ़ द्वारा वर्ष 1997 से निरन्तर उद्यानिकी गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। जिसका वर्षवार उद्यानिकी फसलों, बूंद–बूंद सिंचाई एवं सौलर पम्प सयंत्रों के आंकड़े संलग्न सूची में दर्शाये गये हैं। बूंद–बूंद एवं फव्वारा सिंचाई पद्धति द्वारा लगभग 40–60 प्रतिशत तक पानी की बचत कृषकों द्वारा की जा रही है। जिले में सिंचाई का मुख्य स्रोत नहरे हैं और जिनमें पानी की कम उपलब्धता के कारण सिंचाई पानी की बचत करना आवश्यक है। सौलर पम्प सैट एवं बूंद–बूंद सिंचाई पद्धति के संयुक्त उपयोग द्वारा कृषक सिंचाई पानी एवं ऊर्जा की बचत कर पर्यावरणीय एवं आर्थिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

भारत में बागवानी प्राचीन काल से होती आयी है। चतुर्थ शताब्दी में बहुत से फल जैसे केला, अंजीर, आम, अंगूर और खजूर आदि प्रसिद्ध थे। वेदों में फलों का उत्पादन गौरवस्पद समझा जाता था। मुगल काल में बागवानी के प्रति राजा, प्रजा दोनों की अधिक रूचि थी तथा इस क्षेत्र में बहुत विकास हुआ। ब्रिटिश काल में भारत में फल–फूल, सब्जियों के क्षेत्र में खूब विकास हुआ। उद्यान विज्ञान का अर्थ है घर के समीप किसी निश्चित क्षेत्र में फल, साग–सब्जियों, अलंकृत पौधों को उगाने से है। उद्यानिकी से न सिर्फ उपज ही अधिक होती है बल्कि इसके साथ कृषक की आय भी बढ़ती है और उसे एक नगदी फसल उगाने का अवसर मिल जाता है।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in January 2024, ISSN -2393-8048

उद्यानिकी का सबसे बड़ा लाभ लघु और सीमांत किसानों को हो सकता है क्योंकि बढती जनसंख्या से खेतों का आकार छोटा हो गया है अतः ऐसी स्थिति में साग–सब्जी, फल–फूल की खेती अधिक लाभप्रद हो सकती है। इससे एक तरफ आय अच्छी होती है दूसरी ओर रोजगार लगातार मिलता रहता हैं।

उद्यानिकी से जहाँ सड़क, बाजार, ग्रामीण विकास, पारिस्थितिकी सन्तुलन, भू–उपयोग, संसाधनों का सतत् विकास, भू–क्षरण पर रोक, स्वास्थ्य लाभ, कार्य क्षमता में वृद्धि, कौशल विकास, जल बचत, गैरपरम्परागत ऊर्जा का अधिक उपयोग, फसलों का विशिष्टीकरण, व्यापार, संचार, आधारभूत सुविधाओं में विकास, मानव विकास सूचकांक में वृद्धि, अनकमाण्ड भूमि का कमाण्ड भूमि में रूपान्तरण, सन्तुलित जलवायु, रोजगार आदि क्षेत्रों में उन्नति की सम्भावनाएं है।

उद्यानिकी में विभिन्न भौगोलिक एवं सांस्कृतिक कारकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होगी जिनमें जलवायु, धरातलीय स्थिति, मिट्टी, सिंचाई, भू–जल स्तर, उर्वरक, बाजार, यातायात, पूंजी, भण्डारण, श्रम, कौशल विकास, तकनीकी, सरकारी सहायता आदि है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

उद्यानिकी से जहाँ क्षेत्र में हरियाली को बढ़ावा मिलेगा तो दूसरी ओर टिकाऊ कृषि से संसाधन सदुपयोग होगा एवं लोगों को रोजगार मिलेगा। शहरों व कस्बों के नजदीक वॉन थ्यूनेन की पहली कृषि पेटी कामयाब होगी जहाँ सब्जियों, फलों की मांग ज्यादा रहती है। शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में खजूर, किन्नू, बेर, आंवले की कृषि कर सकते हैं वहीं नहरी उपजाऊ भूमि में किन्नू, अमरूद, नाशपाती, आम, जामुन, माल्टा, अदरक, धनियां, तुलसी, गुलाब, गेन्दे की खेती कर आर्थिक लाभ अर्जित किया जा सकता है। उद्यानिकी से बूंद–बूंद सिंचाई पद्धति, जैविक उर्वरक, सौर ऊर्जा, जल संग्रहण के लिये डिग्गी, नवीन प्रौद्योगिकी व उन्नत बीजों द्वारा अधिक उत्पादन कम व्यय में लिया जा सकता है वहीं बेमौसम में पॉलीहाउस व ग्रीनहाउस में सब्जियां, फूलों की खेती व बीज उत्पादन कर अधिक धन प्राप्त हो सकता है। उद्यानिकी से कृषक को गरीबी से मुक्ति मिलेगी उसके परिवार का लालन पालन भली–भाँति होगा, शिक्षा के स्तर में विकास होगा, उसके सूक्ष्म पोषक तत्वों की पूर्ति होगी, स्वास्थ्य में सुधार होगा, संसाधनों के उपयोग का स्तर बढ़ेगा, क्षेत्र के लोगों के आयु–वर्ग में वृद्धि होगी, भ्रूण हत्या पर रोक लगेगी, लिंगानुपात में बढ़ोतरी होगी, व्यवसायों की विविधता को बढावा मिलेगा, परम्परागत खेती से मुक्ति, आवासों का कोठियों में रूपान्तरण, आधारभूत सुविधाओं का तेजी से विकास होगा, मानव की सोच में बदलाव, खान–पान, रहन–सहन, वेश–भूषा, बोली–भाषा में उन्नति व मानव आधुनिकता के अधिक नजदीक होगा। वह आधुनिक संचार के साधनों का उपयोग कर दैनिक बाजार भावों व नई नई जानकारियों से परिचित होगा। समाज में कृषक का कद ऊँचा होगा उसकी पेठ होगी एवं वह राजनैतिक, प्रशासनिक गतिविधियों में धीरे धीरे भाग लेना शुरू कर देगा।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

हमारे देश में ज्यादातर लोग शाकाहारी है वहां तो कुल सब्जियों का महत्त्व ओर बढ़ जाता है फिर हमारे देश में अन्य देशों की तुलना में इनका उपयोग बहुत कम है। साधारणतः एक भारतीय द्वारा किये जाने वाले समूचे भोजन का केवल 8–10 प्रतिशत भाग फल एवं सब्जी का होता है। जबकि जापान में फल–सब्जी भोजन का 45 प्रतिशत होता है। स्वास्थ्य विज्ञान के अनुसार पौष्टिकता एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से फल–सब्जी सेवन को खाद्यान्न की तुलना में विशेष प्रमुखता दी गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन मापदण्ड के अनुसार प्रति व्यक्ति प्रतिदिन भोजन के साथ 92 ग्राम फलों का सेवन करने की सिफारिश की गई है।

इस व्यवसायिक युग में काश्तकार बागवानी या उद्यानिकी को अपनाकर अधिक आय प्राप्त कर ग्रामीण शहरी क्षेत्रों में स्वरोजगार की कल्पना को साकार कर सकता है। बढ़ती जनसंख्या के कारण तो फल, सब्जी, मसालों, फूलों का अधिक उत्पादन करना ओर आवश्यक हो जाता है। पिछले कुछ वर्षों से प्रदेश के किसानों का रूझान उद्यानिकी की तरफ बढ़ रहा है एवं इसमें सरकार व उद्यान विभाग द्वारा दिया जाने वाला प्रोत्साहन अहम् है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. साक–सब्जियों का क्षेत्रीय विकास एवं सम्भावनाओं का अध्ययन।
2. सब्जियों की खेती के विभिन्न घटकों का विश्लेषण करना।
3. जिले की खेती के लाभकारी पहलू का अध्ययन करना।
4. साक–सब्जी की खेती हेतु उपयुक्त सुझाव देना।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

जिले की उत्तरी चार तहसीलों संगरिया, हनुमानगढ़, टिब्बी एवं पीलीबंगा में उपजाऊ मृदा एवं मीठा जल इत्यादि की सुविधा एवं दक्षिणी की तीन तहसीलों रावतसर, नोहर एवं भादरा में अधिकाशं रेतीली भूमि एवं जलाभाव में ड्रिप फव्वारा एवं नवीन तकनीकी का प्रयोग एवं शुष्क सघन सब्जी का उत्पादन किया जा सकता है। सब्जियां ही ऐसा स्रोत है जिनसे वर्ष में तीन–तीन फसलें ले सकते है। बढ़ती जनसंख्या, घटता जोतो का आकार, मंहगाई, बेरोजगारी इत्यादि सब्जी उत्पादन ही कृषक के लिए विकल्प हो सकता है। क्योंकि प्रति इकाई अधिक उत्पादन, पोषाहार सुरक्षा, कृषि विशेषीकरण, भूमि की उर्वरता में वृद्धि, अधिक आय, सरकारी अनुदान इत्यादि ने कृषकों को आकृष्ट किया है। सब्जी उत्पादन के साथ–साथ मत्स्य पालन, मुर्गीपालन, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, डेयरी, नर्सरी, बीज निर्माण इत्यादि सहक्रियाऐं कर अधिक लाभ ले सकते हैं।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. खींची,एस.एस. (2018)ः उधानिकी कृषि विकास, लुलु पब्लिकेशन्स, यू.एस.ए.।
2. शुक्ल परशुराम : भारत के औषधीय वृक्ष, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर।
3. कुमार प्रमिला : कृषि भूगोल हिन्दी ग्रंथ अकादमी, मध्यप्रदेश।
4. सहायक निदेशक : उधान विभाग हनुमानगढ़ ।
5. निदेशक जिला सांख्यिकी विभाग हनुमानगढ़।